

छायावाद : परिभाषा

हिन्दी साहित्य में छायावाद का प्रमाण नयी कविता है क्योंकि उसमें आत्म शैली की नवीनता अद्भुत है। छायावाद प्रेम प्रकृति और मानव सौन्दर्य की आत्मानुभूतिपरक एवं रहस्यपरक, सूक्ष्मता एवं प्रतीकात्मक पद्धति में प्रकृति चरणा की एक शैली है। इसकी परिभाषा विद्वानों ने निम्न रूप में की है:-

आचार्य रामचंद्र शुक्ल:- "छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिये। एक तो रहस्यवाद के अर्थ में जहाँ उत्तम संबंध काव्यवस्तु है होता है अर्थात् जहाँ कवि उस अनन्त और अज्ञात चित्रण को आलोकन मात्र कर अत्यंत चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है। छायावाद का दूसरा प्रयोग आत्म शैली या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में है।"

जयशंकर प्रसाद:- "छाया आत्मीय दृष्टि से अनुभूति और अभिव्यक्ति की भांगिमा पर अधिक निर्भर करती है। हृदयभक्तता, लाक्षणिकता, सौन्दर्य प्रकृति विधान तथा उपचार वक्रता के साथ स्वानुभूति की विवर्ति छायावाद में विशेषाएँ हैं।"

डॉ० राम दुगार वर्मा:- "परमात्मा की छाया आत्मा पर पड़ने लगती है और आत्मा की छाया परमात्मा में, यही छायावाद है।"

डॉ० नगेन्द्र:- "छायावाद एक प्रकार की भावपद्धति है, जीवन के प्रत्येक भावात्मक दृष्टि कोण है।"

आचार्य नंद दुलारे कात्रपेयी:- "मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म किंतु व्यक्त सौन्दर्य में आध्यात्मिक छाया का भाव मेरे विचार में छायावाद की एक सर्वमान्य व्याख्या हो सकती है।"

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक में प्रमुख समस्या

जयशंकर प्रसाद हल 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक में ऐतिहासिक परिवेश को ध्यान में रखकर वर्तमान समस्या को जी उद्घाटित कर उसे समाधान करने का प्रयास किया गया है। ये निम्न हैं: -

1. अनमेल विवाह: - सम्राट समुद्रगुप्त चंद्रगुप्त को युवराज बनाना चाहते थे परन्तु रामगुप्त अपनी धूर्तता से युवराज बन जा रहा है और गहरदस्ती राजसिंहासन की ताकत से ध्रुवस्वामिनी से भी विवाह कर लेता है। जबकि ध्रुवस्वामिनी चंद्रगुप्त से प्रेम करती थी। रामगुप्त पत्नी को प्रमोद-प्रमोद की वस्तु समझता है, अपने हार्थियों से मुख मोड़ लेता है। वह शक्रराज के प्रस्ताव को स्वीकार कर ध्रुवस्वामिनी को उसे देने के लिए तैयार हो जाता है। इसी योजना ध्रुवस्वामिनी रामगुप्त से करी है तब वह उस पर बिना ध्यान दिए कहता है - "तुम मेरी रानी! नहीं नहीं जाओ। तुमको जाना पड़ेगा। तुम उपहार की वस्तु हो। आज मैं तुम्हें दूसरे को देना चाहता हूँ। इसमें तुम्हें आपत्ति क्यों है?"

2. पुनर्विवाह की समस्या का समाधान: - इस नाटक में पुनर्विवाह की समस्या का बेहिकत समाधान किया गया है। पुरोहितों के द्वारा यह कहा गया है - "यह रामगुप्त मृत और प्रकृति तो नहीं परन्तु गौरव से नष्ट, अन्धरा हो पतित और राजसिंहासनी है। ऐसी अवस्था में रामगुप्त का ध्रुवस्वामिनी पर कोई अधिकार नहीं।"

3. युवराज की समस्या: - इस नाटक में युवराज की समस्या को तथा उसके होने वाली सामाजिक विसंगतियों को उजागर किया गया है क्योंकि कुशल युवराज ही राज्य का उत्तम इला-

आधुनिक हिन्दी-साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ (भाग-01)

हिन्दी के साहित्यिक इतिहास में आधुनिक काल का आरंभ भारतेन्दु जी के द्वारा है जिसका काल 1857 उल्लिखित है। इस काल में प्रमुख प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं:-

1. पद्य के साध गद्य का विकास:- इस काल की सर्वप्रमुख विशेषता यह रही है कि इसमें पद्य के साध गद्य का विकास हुआ। भाषा पूर्ण खड़ी बोली हिन्दी थी। गद्य के साध ही मध्य और विशेषता रही है कि मानव ने अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति बहुत ही सरलता के साथ किया है। इसके फलस्वरूप ही नारद, स्कंधी, कहानी, उपन्यास, निबंध, समालोचना गद्यकाव्य, रेखा-चित्र, जीवनी, संस्मरण कवि की, पत्र, प्रोफाइल, अंतर्वीक्षा, पुस्तक-समीक्षा, इतिहास, आत्मकथात्मक साहित्य आदि का पूर्ण विकास हुआ। मुद्रणकला के विकास के साथ गद्य का विकास हुआ ही इसके साथ इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र, विज्ञान, मनोविज्ञान आदि गद्य में ही लिखे जाने लगे।

2. भाषा का परिवर्तन:- इस काल में दूसरी प्रवृत्ति रही है भाषा परिवर्तन की जिस कारण ब्रजभाषा को पूर्ण स्वीकार लेना पड़ा। खड़ी बोली ने अपना सभ्य प्रभाव जमा लिया। आधुनिक काल में नवोन्मेष की जागरूक करने की जिस भाषा की आवश्यकता थी वह खड़ी बोली ने पूरी कर दी। इसी कारण जन जीवन का चित्रण बिलकुल ही आसान हो गया। यह सब सरल एवं वैज्ञानिक भाषा बन गयी। खड़ी बोली में जहाँ स्वाभाविकता थी वही हमने अपने में अंग्रेजी और उर्दू को भी मिलाकर अपनी उपयोगिता को सिद्ध कर दिया।

3. राष्ट्रीय भावना का उत्थान:- आधुनिक काल की साहित्यिक प्रवृत्तियों में राष्ट्रीय भावना का उत्थान हुआ जिससे राजनीतिक चेतना की अत्यधिक वृद्धि हुई। राज्यभक्ति, देशभक्ति, अतीत भारत का गौरव गान, वर्तमान स्थिति पर पश्चात्ताप, नवीन जागरण का संदेश आदि प्रवृत्तियों से राजनीतिक चेतना के फलस्वरूप ही आई। इसी बीच कांग्रेस की स्थापना हुई जिसने देश का राजनीति समीक्षण ही बरत दिया। देश की दुर्दशा का ज्ञान, संगठन की सज्जगी प्रेरणा, राष्ट्रप्रेम, आत्मबलिदान की महत्ता, स्वायत्ताहियों तथा स्वतंत्रता के उपरासों का अर्थोमान, राष्ट्रीय प्रेमभावना में कीर्तिश्रृंखला स्वतंत्रता प्रेम, मानवतावादी विचारधारा अंतराष्ट्रीय विषयबद्धत्व की भावना तथा पंचशील पर आधारित विश्वशांति एवं सहकारित्व की भावनारें उज्ज्वल रूप से विद्यमान हुई।

4. नवयुग की चेतना का विवेकचन:- इस काल में नवयुगीन चेतना के विविध रूपों के दर्शन होते हैं। साहित्य का प्रतिपाद्य उच्च वर्ग नहीं रह गया, इसके स्थान पर जनवादी विचारधारा का साहित्य लीव होने लगा। आदर्श के स्थान पर यथार्थ का वास्तविक चित्र प्रस्तुत किया गया। निम्न-वर्गीय समाज एवं शोषितों के प्रति व्यापक सहानुभूति प्रदर्शित की गई। मार्क्सवादी विचारधारा से शोषितों के प्रति अत्यधिक सहानुभूति व्यक्त किया गया। कथा के नायक सामान्य प्राणियों भ्रष्ट, गरीब, भीखारी बेसहारा बच्चे आदि को बनाया गया। अंग्रेजी सत्ता का घोर विरोध एवं देशी वस्तुओं का पूर्ण समर्थन किया गया। समाज में व्याप्त अशिक्षा, गरीबी तथा अत्याचार का वास्तविक रूप साहित्यिक रचनाओं में खुलकर दिखाया जाने लगा।

सिद्ध साहित्य

हिन्दी के साहित्यिक इन्नायन में आदिग्रन्थ के सिद्ध साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान है। बौद्ध धर्म से प्रणीत मंत्र द्वारा लिखे प्राप्त करने की चेष्टा करने वाले योगी सिद्ध कहलाये और इनके द्वारा रचा गया साहित्य 'सिद्ध साहित्य' कहलाया। इसकी भाषा अर्द्धभाषा थी अपभ्रंश है जिसे दैह्य भाषा भी संज्ञा दी गयी है। इनकी रचना में शौत एवं शृंगार रस की प्रधानता है। काव्यात्मक रस-परिपाक न होने पर भी उनमें झलकित रस का आनन्द प्राप्त होता है। सिद्धों की कुल संख्या 84 है और इनके साहित्यिक रचना को तीन भागों में बाँटा गया है:—

1. नीति तथा आचार से संबंधित साहित्य
2. उपदेशात्मक साहित्य
3. साधना संबंधी अर्थात् रहस्यवादी साहित्य

सिद्ध साहित्य की प्रवृत्तियाँ:—

1. सिद्ध साहित्य में वेदसम्मत एवं ब्राह्मणसम्मत धर्म की अवहेलना है और जन्म-साधना के वर्णन के साथ ही तान्त्रिक तत्वों की भी सन्निवेश है।
2. सिद्ध साहित्य में 'पंचमकार' की त्रींशत्कर्मधार्या मिलती है।
3. इसमें योगसाधना तथा कथा-साधना पर जोर दिया गया है तथा 'शून्य' साधना की प्रस्तावना की है।
4. इस साहित्य में शून्य समाधि या सहज समाधि का वर्णन उल्लेख बाँसी शैली में दिया गया है।
5. इसमें परावृत्ति और उल्टी साधना का वर्णन उपलब्ध है।
6. इसमें सामाजिक कुरीतियाँ, जाति-भेद एवं वर्णभेद की निंदा तथा वैदिक देवताओं के प्रति अनार्यता और पैतृत्व के आडंबर का खंडन किया गया है।
7. इसमें काव्य रचना मुक्त शैली है जिसे दोहा, गीत आदि का प्राधान्य है।
8. इसमें गुह्य साधना द्वारा सिद्धि प्राप्ति का चिह्न रखा तंत्रों द्वारा न्यमत्कार के प्रदर्शन का भी उल्लेख है।